श्री शान्तिनाथ भगवान का मंदिर,आसींद-311301

यह घुमटबन्द मंदिर भीलवाड़ा से 55 किलोमीटर दूर है। यह मंदिर व उपाश्रय के प्रयोग में आता है । उपाश्रय में प्रतिमा स्थापित है। यह भी बतलाया गया है कि मंदिर 200 वर्ष प्राचीन रहा है। इसी उपाश्रय में अमृत भारती विद्या मंदिर संचालित है। दोनों ओर कमरे बने हुए है। यह उपाश्रय केवल किराया प्राप्ति व किसी समाज के सदस्य के मृत्यु पर बैठक के प्रयोग में आता है। उल्लेखानुसार यह मंदिर सं. 1800 के लगभग का निर्मित है। मंदिर व मंदिर के ऊपर की मंजिल में बालक जूते लेकर आते-जाते हैं जो मंदिर परम्परा के विरूद्ध है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

1) श्री शान्तिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1860 वे. सुदि 3 का लेख है।
2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 12'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1860 वै. सुदि 3 का लेख है।
3) श्री जिनेश्वर भगवान की 7'' ऊँची उत्थापित प्राचीन प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं हैं।
4) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 8'' ऊँची उत्थापित प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।
5) श्री भैरव की श्याम पाषाण की 4'' ऊँची प्रतिमा है।
6) श्री अधिष्ठायक देव की तीन मूर्तियें हैं।

वार्षिक ध्वजा नहीं चढ़ाई जाती है।

मंदिर की व्यवस्था तेरापंथ जैन समाज की ओर से देखी जा रही है।

इस प्रकरण का न्यायालय में विवाद चल रहा है।

सम्पर्क सूत्र - श्री गणेशलाल जी चोरड़िया, फोन : 01480-220241

आसीन्द के शासक कुशवाह के रावत श्री अर्जुनसिंह के चौथे पुत्र अजितसिंह के वंशज थे। उन्हें रावत की उपाधि प्राप्त थी। अन्त में शासक निःसन्तान मृत्यु हो जाने से महाराणा फतहसिंह ने इस क्षेत्र को खालसे किया ।

श्री मुनिसुव्रत भगवान का मंदिर चेनपुरा-311301, तहसील आसींद

यह घूमटबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 60 व तहसील मुख्यालय से 18 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर करीब 200 वर्ष प्राचीन बतलाया गया। खण्डहर हो जाने से वि.सं. 2053 में उसी स्थान पर नूतन मंदिर बनवाया और प्रतिष्ठा कराई गई।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री मुनिसुव्रत भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 18'' की प्रतिमा है। इस पर श्री राजेन्द्रसूरि जी पढ़ने में आता है ।

2) श्री अजितनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर श्री जितेन्द्रसूरि जी द्वारा प्रतिष्ठित का लेख है।

3) श्री शान्तिनाथ भगवान की (मूलनायक के बांए) श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

दोनो ओर आलियों में - दाहिनी ओर :

1) श्री महावीर भगवान की धातु की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2052 का लेख है।

बांई ओर :

1) श्री वासुपुज्य भगवान की श्वेत पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है । इस पर सं. 2050 का लेख है ।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री मुनिसुव्रत भगवान की 8'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2051 चैत्र सुदि 4 का लेख है।

2) श्री शान्तिनाथ भगवान की 8'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2052 वैशाख सुदि 4 का लेख है।

निज मंदिर के बाहर – दाहिनी ओर :

1) श्री माणिभद्र देव की श्याम पाषाण की 8'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2051 चैत्र सुदि 4 का लेख है।

2) श्री महावीर भगवान की धातु की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2052 का लेख है।

बाई ओर :

पद्मावती देवी की श्याम पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है। बाहर चार स्तम्भ हैं। चित्रकारी भी बनी हुई है। शत्रुंजय व अष्टापद तीर्थ के चित्रपट्ट बने हुए है।

सभामण्डप में :

1) श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री रत्नप्रभ सूरि जी की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

श्री गजानन (गणेश) की श्याम पाषाण की 21'' ऊँची प्रतिमा है।

3 मंगल मूर्तियां स्थापित हैं।

वार्षिक ध्वजा ज्येष्ठ कृष्णा 8 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की व्यवस्था स्थानीय श्वेताम्बर जैन समाज द्वारा की जाती है। समाज की ओर से श्री पुखराज जी तातेड़ कार्य देखते है। सम्पर्क सूत्र : 99284 65186

बच्चों पर निवेश करने की सबसे अच्छी चीज है
अपना समय और अच्छे संस्कार।
ध्याम रखें,
एक श्रेष्ठ बालक का निर्माण
सौ विद्यालय को बनाने से भी बेहतर है।

श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर मोड़ का निम्बाहेड़ा-311024, तहसील आसींद

यह घूमटबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 40 किमी, तहसील मुख्यालय से 25 किमी व मुख्य मार्ग से 3 किलोमीटर भीतर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर करीब 800 वर्ष प्राचीन बतलाया गया है। प्राचीनता का स्पष्ट प्रमाणीकरण नहीं होता लेकिन पाषाण की प्रतिमाओं पर व धातु की प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण लेख प्राचीनता की ओर इंगित करता है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1226 (1826) (अस्पष्ट) का लेख है।
2) श्री चन्द्रप्रभ भगवान की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1548 (1948) का लेख है।
3) श्री नेमिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1226 (1826) वैशाख सुदि 3 का लेख है।

इन तीनों प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण संवत् स्पष्ट नहीं है। कोष्ठक में दिया गया भी सही हो सकता है। पुनः परीक्षण किया जा सकता है।

उत्थापित धातु की चल प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 7'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1534 फा. शु. 2 का लेख है।
2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मयपरिकर) 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1634 माघ वदि 8 का लेख है।

3) माणिभद्र जी 9'' ऊँची प्रतिमा है । इस पर सं. 2023 का लेख है।

4) श्री जिनेश्वर भगवान की 2'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1316 माघ सुदि 9 का लेख है।

5) श्री जिनेश्वर भगवान की 3'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1215 लेख है।

6,7,8) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 2'', 2'', 1.5'' ऊँची प्रतिमा है।

9–11) श्री पार्श्वनाथ भगवान की सिंहासन पर श्री चतुर्मुखी प्रतिमाएं 5'' ऊँची खण्डित प्रतिमा है। मंदिर का जिर्णोद्धार की आवश्यकता है।

12) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 3'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1552 का लेख है।

13) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 2.5'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1605 का लेख है।

बाहर आलियों में :

1) श्री पार्श्व यक्ष की श्याम पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर विशाल विजय जी का नाम दिखाई देता है।

2) श्री पद्मावती देवी की 9'' ऊँची प्रतिमा है।

टाईल्स लगी है।

ऐसी जानकारी मिली है कि कृषि भूमि है लेकिन ज्ञात नहीं है।

मंदिर का दैनिक खर्च जन सहयोग द्वारा किया जाता है।

वार्षिक ध्वजा भादवा सुदि 2 को चढ़ाई जाती है । ध्वजा दण्ड नहीं है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री प्रकाश जी व बाबूलाल जी जैन करते हैं ।

सम्पर्क सूत्र : श्री प्रकाश जी, मो. 99830 04900 व श्री बाबूलाल जी मो. 77427 03330

धीरज मत खोओ।
हीनता और हताशा तुम्हें शोभा नहीं देती।
अपने आत्म-विश्वास को बढ़ाओं
फिर से प्रयास करो,
तुम्हें सफलता अवश्य मिलेगी।

श्री ऋषभदेव भगवान का मंदिर, पुरानी परासोली-311204, तहसील आसींद

यह घूमटबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 60 व तहसील मुख्यालय से10 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। 250 वर्ष प्राचीन यह मंदिर श्री जोरावरमल जी बापना द्वारा सं. 1800 में निर्मित है। इस ग्राम में श्री बापणा की कचहरी लगती थी । एक समय श्री बापणा की माताजी भी साथ में ग्राम में आई। वे बिना दर्शन के पानी भी नहीं पीती थी। ग्राम में मंदिर नहीं था। श्री बापना ने मंदिर का निर्माण कराया। समय के अनुसार मंदिर खण्डहर हो गया। जिसके फलस्वरूप मंदिर का जिर्णोद्धार सं. 2040 में हुआ और प्रतिष्ठा सं. 2066 में निपुण रत्न विजय जी म.सा. द्वारा सम्पन्न हुई। उल्लेखानुसार यह मंदिर जोरावरमल जी चन्दनमल जी ने सं. 1900 के लगभग में बनाया। यह प्रथम श्रेणी का ठिकाना रहा है। इसके शासक चौहान कहलाते थे।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री ऋषभदेव भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 9'' की ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।

2) श्री पार्श्वनाथ (शंखेश्वर) भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है।

3) श्री शान्तिनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 12'' ऊँची प्रतिमा है।

4) श्री पार्श्वनाथ (चिन्तामणि) भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 17' ऊँची प्रतिमा है।

5) श्री महावीर भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 8'' ऊँची प्रतिमा है।

श्री शीतलनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2056 माघ कृष्णा 5 का लेख है।

आलियों में :

1) श्री गौमुख यक्ष की श्याम पाषाण की 12'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री चक्रेश्वरी देवी की श्याम पाषाण की 12'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2066 का लेख है।

उत्थापित धातु की चल प्रतिमाएं व यंत्र :

1–2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा है।

3) श्री श्रावक की मूर्ति है।

4) श्री नवगृह गोलाकार ताम्र यंत्र 6.5'' का है।

सभा मण्डप में :

1) श्री माणिभद्र देव की चाँदी की परत चढ़ी 14'' ऊँची प्राचीन चमत्कारी प्रतिमा है।

2) श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

3) श्री अधिष्ठायक देव की मूर्ति स्थापित है।

तीन मंगल मूर्तियाँ स्थापित है।

मंदिर के प्रवेश द्वार ऊपर तीन देवरियों में तीन प्रतिमाएं स्थापित है।

पास में उपाश्रय है।

मंदिर की 12 बीघा जमीन है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा फाल्गुन वदि 13 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की व्यवस्था स्थानीय स्थानकवासी श्रावक संघ द्वारा की जाती है। समाज की ओर से श्री पारसमल जी कांठेड द्वारा व्यवस्था देखी जाती है। सम्पर्क : 014780-220701, 09828336972

नोट : मेवाड़ के महाराणा भीमसिंह के समय में देश (मेवाड़) की आर्थिक स्थिति बहुत खराब हो गई थी और मेवाड़ की आर्थिक सुधार के लिए श्री जोरावरमल जी बापणा को इन्दौर से मेवाड़ बुलाकर मेवाड़ के व्यापार का लेन देन उनके माध्यम से होने लगा। उसी आधार पुरानी परासोली ग्राम में उनकी कचहरी स्थापित की और वहाँ से इस क्षेत्र का व्यापार का लेन–देन करते थे।

श्री नमिनाथ भगवान का मंदिर जगपुरा-311304, तहसील आसींद

यह घूमटबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 60 व तहसील मुख्यालय से 18 पुरानी पारसोली से 3 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। उल्लेखानुसार यह मंदिर सं. 1900 में संघ द्वारा निर्मित है। मंदिर जीर्णशीर्ण होने पर आंशिक जिर्णोद्धार श्री जितेन्द्र सूरि जी म. सा. ने सं. 2048 में कराया गया। पूर्व में श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर था। वर्तमान में नमिनाथ भगवान का है। यह ग्राम तृतीय श्रेणी का ठिकाना रहा है जिसके शासक राठौड़ थे।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री नमिनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 19'' की ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2005 माघ सुदि 6 का लेख है।

2) श्री महावीर भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2008 ज्येष्ठ शुक्ला 5 का लेख है।

3) श्री आदिनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्याम पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2010 का लेख है।

4) उत्थापित धातु की जिनेश्वर भगवान की 7 पंचतीर्थी प्राचीन प्रतिमा है। इस पर लेख अपठनीय है।

बाहर :

1) श्री भृकुटि यक्ष श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री गन्धारी की श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है।

अस्वच्छता है परिक्रमा कक्ष बना है। सभा मण्डप की गुम्बज पर चित्रकारी बनी हुई है, जिर्णोद्धार की आवश्यकता है।

मंदिर की 5 बीघा जमीन है जो पुजारी के पास है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा नहीं चढ़ाई जाती है।

इस मंदिर की देखरेख जैन समाज की ओर से एडवोकेट श्री गोतम जी द्वारा की जाती है।

ये चित्र मुनि पुण्यविजय जी म.सा. द्वारा लिखित भाषा शंत्रुजय महात्म में सन् 1468 की है। इस चित्र में गणेश का चित्र भी अंकित है।

हमें जो मिला है, हमारी पात्रता से ज्यादा मिला है।
यदि आपके पाँव में जूते नहीं है,
तो अफसोस मत कीजिये।
दुनिया में कई लोगों के पास तो पाँव ही नहीं है।

श्री महावीर भगवान का मंदिर जेतगढ़, 311302, तहसील आसींद

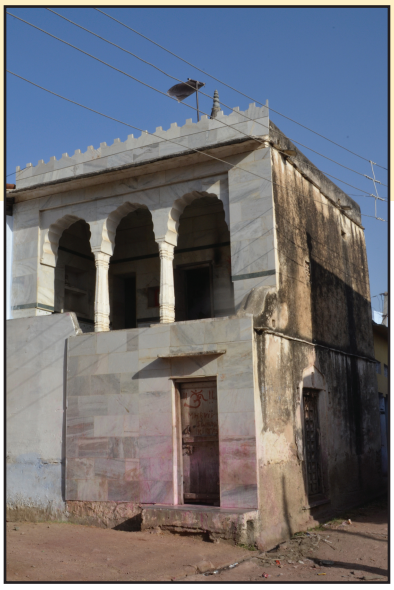

यह घूमटबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 60 व तहसील मुख्यालय से20 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। उल्लेखानुसार यह मंदिर संवत् 1989 में संघ द्वारा निर्मित है। अत: 80 वर्ष प्राचीन बतलाया गया।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री महावीर भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 19'' की ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1989 माघ शु. 15 का लेख है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

1–3) श्री जिनेश्वर भगवान की 3'', 2'', 1'' ऊँची प्रतिमा है।

4) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 3' ऊँची प्रतिमा है।

बाहर :

दो अधिष्ठायक देव की मूर्तियें स्थापित है ।

इस मंदिर की 4 बीघा भूमि व एक दुकान है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा भादवा सुदि 5 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री लादुलाल जी रांका, मो. 94139 557471 एवं श्री महावीर जी रांका, मो. 99830 64540 द्वारा की जाती है

श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर बदनोर-311302, तहसील आसींद

यह शिखरबंद विशाल मंदिर जिला मुख्यालय से 70 व तहसील मुख्यालय से 16 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में राजमहल के पास में स्थित है। यह मंदिर 900 वर्ष प्राचीन बतलाया है। ग्राम के स्थापित होने के साथ साथ मंदिर भी निर्मित हुआ। पूर्व में यह मंदिर ईटों का संवत् 1169 आषाढ़ सुदि 2 का निर्मित है और प्रतिष्ठा सं. 1197 में सम्पन्न हुई। अंतिम जिर्णोद्धार 15 वर्ष पूर्व श्री जितेन्द्रसूरि जी की निश्रा में सम्पन्न हुआ। यह प्रथम श्रेणी का ठिकाना रहा है। यहाँ के शासक राठौड़ कहलाते थे । यह महल श्री जयमल ने बनाया। श्री जयमल राठौड़ मेवाड़ की सेना का नेतृत्व करते हुए अकबर की सेना का सामना वीरता से करते हुए सन् 1568 में चित्तौड़ में शहीद हुए । इनकी प्रतिमा नगर के बस स्टेण्ड पर लगी हुई है । इसके पागबंद खड़क्याकण था। बीच में मुगलों के आक्रमण से टूटता रहा, जीर्णोद्धार भी होते रहे, कोई उल्लेख नहीं मिलता।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री आदिनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 15'' की ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1865 माघ सुदि 2 का लेख है।

2) श्री चन्द्रप्रभ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 19'' की ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1860 वै. सुदि 3 का लेख है।

3) श्री सम्भवनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 19'' की ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1860 वै. सुदि 3 का लेख है। नीचे पेन्ट से चन्द्रप्रभ भगवान का नाम लिखा है ।

4) श्री चन्द्रप्रभ भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' की ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1860 वै. सुदि 3 का लेख है।

5) श्री चन्द्रप्रभ भगवान की श्वेत पाषाण की 14'' की ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1860 वै. सुदि 3 का लेख है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री शान्तिनाथ भगवान की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2042 का लेख है।

2–3) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 2'', 2'' ऊँची प्रतिमा है।

4) श्री जिनेश्वर भगवान की 2'' ऊँची प्रतिमा है।

5) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 6'' का है। इस पर राजा धनपतसिंह का लेख है।

6) श्री अष्ठमंगल यंत्र 6''X3'' का है। इस पर वीर सं. 2519 का लेख है।

7) श्री जिनेश्वर भगवान की 8'' ऊची प्रतिमा है। इस पर अस्पष्ट अपठनीय लेख है।

बाहर अलियों में :

1) श्री गौमुख यक्ष की श्वेत पाषाण की 14'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री चक्रेश्वरी देवी श्याम पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

सभा मण्डप में दाहिनी ओर :

1) श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री चन्द्रप्रभ भगवान की श्वेत पाषाण 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1860 का लेख है।

3) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण 19'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर भट्टारक सदा सुख द्वारा प्रतिष्ठित होने का लेख है।

4) श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण 19'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर भट्टारक सदा सुख का वै. सुदि 3 का लेख है।

5) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण 17'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1860 का लेख है।

बाई ओर :

1) श्री अधिष्ठायक देव की 12'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1860 का लेख है।

3) श्री पार्श्वनाथ (शंखेश्वर) श्वेत पाषाण की 21'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1860 का लेख है।

4–5) श्री चन्द्रप्रभ भगवान की श्वेत पाषाण की 19'' व 13'' ऊँची प्रतिमा है। इन पर सं. 1860 का लेख है।

सुपार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची उत्थापित प्रतिमा है। मंदिर में एक गर्भगृह है। कहा जाता है कि मुगल काल में आक्रमण होने के कारण सभी प्रतिमाओं को सुरक्षित स्थान पर विराजमान कराई।

इस गर्भगृह में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

1) श्री जिनेश्वर (शान्तिनाथ) भगवान की हरे पाषाण की 9'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।

2) श्री सुमतिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण 12'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।

3) श्री जिनेश्वर भगवान की पिंक पाषाण 13'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।

4) श्री जिनेश्वर भगवान की हरे पाषाण की 11'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।

5) श्री पार्श्वनाथ भगवान की नीला पाषाण की 7'' ऊँची प्रतिमा है।

6) श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।

7) श्री जिनेश्वर भगवान की (परिकर सहित) श्वेत पाषाण की 21'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।

8) श्री ऋषभदेव भगवान की (परिकर सहित) श्वेत पाषाण की 31'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। इस पर सं. 1501 ज्येष्ठ वदि 14 का लेख है।

9) दो हाथी श्वेत पाषाण के जिनमें से एक सूण्ड टूटी हुई है।

बाहर – ऊपर :

1) श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 25'' ऊँची प्राचीन खण्डित प्रतिमा है। इस पर सं. 1799 का लेख है।

2) श्री कुन्थुनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 27'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।

मंदिर की 10 बीघा जमीन है जो पुजारी के पास है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा वैशाख सुदि 13 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की व्यवस्था जैन समाज की ओर से श्री लादूलाल जी मलावत देखते है।

सम्पर्क सूत्र - 80585 22873, 01480-225806

नोट : बरामदा में एक तहखाना (भूतल) बना है जिसमें प्राचीन खण्डित प्रतिमाएं है जो मुगलों के समय में आक्रमण होने के कारण प्रतिमाएं छिपाई जाती रही होगी ।

ये चित्र पूज्य श्री बृजेशकुमार जी की कृतज्ञता में बाल गोपाल स्तुति, कांकरोली से सम्बन्धित है।

क्रोध प्रेम का नाश करता है,
मान विनय का नाश करता है,
माया मित्रता का नाश करता है,
लोभ सर्वनाश करता है

श्री संभवनाथ भगवान का मंदिर पाटण-311302, तहसील आसींद

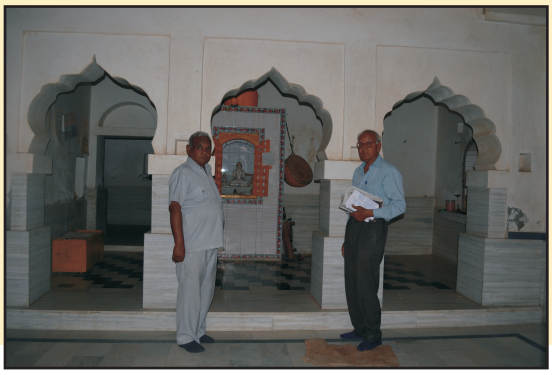

यह घुमटबंद मंदिर है। यह मंदिर जिला मुख्यालय से 105 व तहसील मुख्यालय से 22 किलोमीटर दूर है। यह मंदिर बहुत प्राचीन है। पूर्व में यह यति जी का मंदिर था । उल्लेखानुसार यह पूर्व में आदिनाथ भगवान का मंदिर रहा है और इसका निर्माण सं. 1500 के लगभग हुआ।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री संभवनाथ भगवान की (मूलनायका) श्वेत पाषाण की 12'' की ऊँची उत्थापित प्रतिमा है। इस पर सं. 1963 चैत्र सुदि 13 का लेख है।
2) श्री जिनेश्वर भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 7'' ऊँची उत्थापित प्रतिमा है।
3) श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 6'' ऊँची उत्थापित प्रतिमा है।

श्री जिनेश्वर भगवान की पाषाण की 3'' ऊँची उत्थापित प्राचीन है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 2'' की ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।
2) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 5'' का है। इस पर सं. 2054 माघ सुदि 13 का लेख है।

आलिए में :

अधिष्ठायक देव की चार मूर्तियां हैं।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा नहीं चढ़ाई जाती है।

इस मंदिर की व्यवस्था पूर्व में यति द्वारा की जाती थी, कुछ विवाद होने से यति से जैन समाज ने व्यवस्था अपने अधिकार में ली व यति का ग्राम छोड़कर जाने को बाध्य किया।

समाज की ओर से श्री सोहनलाल जी नाहर एवं श्री शांतिलाल जी नाहर (मो. 9680920867)व्यवस्था देखते है। सम्पर्क सूत्र : 01480-226104, 94603 54521

श्री अजितनाथ भगवान का मंदिर शंभूगढ़-311302, तहसील आसींद

यह घूमटबंद विशाल मंदिर जिला मुख्यालय से 47 व तहसील मुख्यालय से 17 किलोमीटर दूर ग्राम के एक किनारे पर स्थित है। मंदिर विशाल, ऊँचे स्तर, किला स्वरूप बना हुआ है। ग्राम सं. 1921 में बसा, उसके साथ ही मंदिर का निर्माण हुआ। ग्राम व मंदिर को हिम्मत सागर जी यति द्वारा बसाया व बनाया गया। पूर्व में मंदिर की व्यवस्था उदयपुर महाराणा के द्वारा की जाती थी, बाद में मंदिर जीर्ण-शीर्ण की अवस्था के हो जाने सं. 2056 में श्री जितेन्द्रसूरि जी म.सा. व यति श्री भगवती सागर जी के सहयोग से जिर्णोद्धार कराया गया।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री अजितनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 35'' की ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

2) श्री शान्तिनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 12'' की ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2050 का लेख है।

3) श्री सुमतिनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 12'' की ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2050 का लेख है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री सम्भवनाथ भगवान की 10'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1570 का लेख है।

2) श्री शान्तिनाथ भगवान की 6'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1663 का लेख है।

3) श्री सुमतिनाथ भगवान 6'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1525 का लेख है।

4–13) इन प्रतिमाओं के अतिरिक्त विभिन्न नाप की दस प्रतिमाएं है लेकिन यति जी की परिचित ने विवरण लेने से मना करने से, कार्य नहीं किया।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा संवत्सरी पर चढ़ाई जाती है तथा यह भी बताया कि भादवा सुदि प्रतिपदा (भगवान के जन्मवाचन के दिन चढ़ाई जाती है)

मंदिर की व्यवस्था श्री भगवती सागर जी यति द्वारा की जाती है।

सम्पर्क : 01480-223758

श्री महावीर भगवान का मंदिर झबरकिया-311302, तहसील आसींद

यह शिखरबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 55 व तहसील मुख्यालय से 12 किलोमीटर ग्राम में प्रवेश करते ही दांई ओर स्थित है। यह नूतन मंदिर है मंदिर के लिए भूमि क्रय करके निर्माण कराया और प्रतिष्ठा दि. 10-12-2010 को कराई। इस मंदिर की भूमि जब पड़त पड़ी थी तब मंदिर के सामने ही एक जाट परिवार रहता है । उस जाट कोई चार वर्ष पूर्व स्वप्न में देखा कि इस रास्ते पर साधु महाराजा निकल रहे हैं, उन्होंने कहा कि यह जमीन किसकी है तो उत्तर दिया कि भगवान की है (मेरी है) तो यहाँ भगवान का मंदिर बनेगा । दूसरे दिन महता परिवार को यह बात बतलाई, उन्होंने हंसी में टाल दिया । संयोग ऐसा बना कि महता परिवार ने भूमि क्रय कर मंदिर बनाया।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री महावीर भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 23'' की ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री आदिनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 19'' की ऊँची प्रतिमा है।

3) श्री मुनिसुव्रत भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 19'' की ऊँची प्रतिमा है।

4) श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है।

5) श्री पार्श्वनाथ (शंखेश्वर) भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है।

इन पाँचों प्रतिमा की प्रतिष्ठा संवत् 2067 मिगसर सुदि 5 (दिनांक 10.12.10) को प्रतिष्ठा पं. श्री निपुणरत्न विजय जी मं. सा. की निश्रा में सम्पन्न हुई।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री शन्तिनाथ भगवान की 12'' ऊँची चतुविशंति प्रतिमा है। इस पर सं. 2067 माघ कृष्णा 13 का लेख है।

2) जिनेश्वर (पद्प्रभ) की 8'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 2044 का लेख है।

3) श्री शान्तिनाथ भगवान 9'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 2067 माघ कृ. 13 का लेख है।

4—5) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 9'' व 6'' का है। इस पर सं. 2067 का लेख है।

6) श्री सिद्धचक्र गोलाकार 4'' का है। इस पर सं. 2025 माघ सुदि 13 का लेख है।

7) अष्ठमंगल यंत्र 6''X3.5'' का है। इस पर सं. 2066 का लेख है।

दोनों ओर आलियों में :

1) श्री गौतम स्वामी की श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण का 12'' ऊँची प्रतिमा है।

इन दोनों प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा भी 10.12.10 को सम्पन्न हुई।

सभा मण्डप के दोनों ओर आलियों में :

1) श्री माणिभद्र की श्वेत पाषाण की (हाथी पर सवार) 13'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री नाकोड़ा भैरव पीत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है।

3) श्री मातंग यक्ष की श्वेत पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है।

4) श्री सिद्धयिका देवी की श्वेत पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा मिगसर सुदि 5 को चढ़ाई जाती है।

समाज की ओर से श्री थानसिंह जी महता व श्री महावीर जी महता व्यवस्था देखते है।

सम्पर्क सूत्र – 9982174813, 9667911149

श्री ऋषभदेव भगवान का मंदिर कवल्यास-311302, तहसील आसींद

यह पाटबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 40 व तहसील मुख्यालय से 35 किलोमीटर दूर है। यह मंदिर करीब 150 वर्ष प्राचीन बतलाया गया है। यह तृतीय श्रेणी का ठिकाना है। इसके शासक सांगावत कहलाते थे।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री जिनेश्वर भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 12'' की ऊँची प्रतिमा है। कोई लेख व लांछन नहीं है। साधारण बोलचाल की भाषा में ऋषभदेव भगवान की प्रतिमा कहते है।
2) श्री पद्मप्रभ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 8'' की ऊँची प्रतिमा है।
3) श्री शान्तिनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 14'' की ऊँची उत्थापित प्रतिमा है।
4) श्री पद्मप्रभ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 8'' ऊँची प्रतिमा है।
5) श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्याम पाषाण की 4'' ऊँची प्रतिमा है।

ऐसी भी जानकारी मिली कि मंदिर की भूमि भी है। जांच करने की आवश्यता है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा नहीं चढ़ाई जाती है।

मंदिर की व्यवस्था जैन समाज की ओर से श्री लक्ष्मीलाल जी डुंगरवाल करते है।

सम्पर्क सूत्र 01480 - 228191

श्री महावीर भगवान का मंदिर मोतीपुर-311302, तहसील आसींद

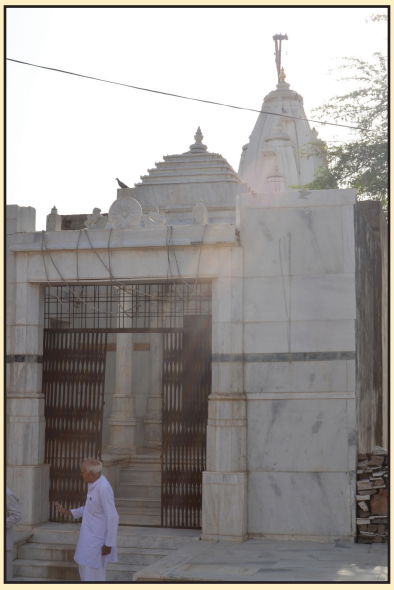

यह शिखरबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 55 व तहसील मुख्यालय से 18 किलोमीटर दूर है। यह मंदिर 100 वर्ष से अधिक प्राचीन है। पूर्व के ग्राम की बस्ती ग्राम में प्रवेश करते ही स्थापित थी। वहाँ पर प्राचीन मंदिर था। जिसमें श्री केशरिया जी की प्रतिमा स्थापित थी। खण्डहर मंदिर का ढांचा आज भी विद्यमान है। मंदिर वहाँ पर बनाने की योजना थी लेकिन मनुष्यों में वैचारिक मतभेद के कारण निर्माण नहीं कराया गया।

श्री रामपाल जी स्वर्णकार निवासी कवल्यास जो पहले इसी ग्राम (मोतीपुर) के रहने वाले थे। उन्होंने अपने मकान की जमीन मंदिर को भेंट में प्रदान की और मंदिर का निर्माण करा 23.01.2006 को आचार्य श्री अशोक रत्न सूरि जी म. सा. की निश्रा में प्रतिष्ठा कराई।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री महावीर भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 27'' की ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 9'' की ऊँची प्रतिमा है।

3) श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 9'' की ऊँची प्रतिमा है।

दोनों ओर आलियों में :

1) श्री मातंग यक्ष की श्वेत पाषाण की 12'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री सिद्धायिका देवी की श्वेत पाषाण का 12'' ऊँची प्रतिमा है।

बाहर :

1) श्री केशरिया जी की श्याम पाषाण की 4'' ऊँची प्रतिमा है। यह प्रतिमा पूर्व में प्राचीन मंदिर में स्थापित थी।

2) श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की 14' ऊँची प्रतिमा है।

खण्डहर मंदिर एक दृष्टि में

पूर्व में स्थापित मंदिर खण्डहर हो गया व बस्ती भी अन्यत्र (समीप ही) स्थानान्तरित हो जाने से नूतन मंदिर का निर्माण कराया ।

सभी प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा 23.1.2006 में सम्पन्न हुई।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा माघ वदि 8 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की व्यवस्था जैन समाज द्वारा की जाती है।

समाज की ओर से श्री शान्तिलाल जी बोहरा, मो. 9785566292

श्री भंवरलाल जी बोहरा, मो. 8058285111

संसार में न कोई तुम्हारा मित्र है और न शत्रु,
तुम्हारें अपने विचार ही शत्रु और
मित्र बनाने के लिए उत्तरदायी है।

श्री धर्मनाथ भगवान का मंदिर जयनगर-311302 तहसील आसींद

यह शिखरबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 73 व तहसील मुख्यालय से 17 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर 400 वर्ष प्राचीन बतलाया गया है। पूर्व में यह यति जी का निवास स्थान तथा छात्रों को पढ़ाने का कार्य करते थे। पूर्व में यह घर देरासर था जिसमें श्री शान्तिनाथ भगवान विराजित थे । उल्लेखानुसार यह मंदिर सं. 1775 के लगभग निर्मित है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री धर्मनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 19'' की ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2050 मिगसर वदि 3 का लेख है।

2) श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की 4'' की ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री सुमतिनाथ भगवान की 7'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1521 माघ सुदि 6 का लेख है।

2) श्री आदिनाथ भगवान की 6'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1521 माघ सुदि 6 का लेख है।

3) श्री पार्श्वनाथ भगवान 3'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1623 का लेख है।

4) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 3'' ऊँची का है। इस पर अस्पष्ट लेख है।

बाहर :

1) श्री माणिभद्र देव जी श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री पद्मावती देवी श्री श्वेत पाषाण 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख है।

मंदिर की 2.5 बीघा जमीन समाज के सदस्यों के पास है। पास में उपाश्रय भी है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा मगसर सुदि प्रतिपदा को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की व्यवस्था समाज की ओर से श्री चांदमल जी रांका देखते है। दैनिक कार्य श्री शान्तिलाल जी रांका द्वारा देखा जाता है। सम्पर्क सूत्र : मो. 94145 74171

यह चित्र सन् 1550–1570 का है जो पंचकामना विश्वविद्यालय मे हैं। इसमें राजा अमरशक्ति, उसके पुत्र व मंत्री है। इसमें राजपूज शैली की वेशभूषा, मछली जैसी आँखों को कलात्मक दृष्टि से दर्शाया गया है।

धन और व्यवसाय में इतने भी व्यस्त मत बनिये कि, स्वास्थ्य, परिवार और अपने कर्तव्यों पर ध्यान न दे पाएँ।

श्री वासुपूज्य भगवान का मंदिर आकड़ सादा-311302 तहसील आसींद

यह शिखरबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 70 व तहसील मुख्यालय से 16 किलोमीटर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर करीब 200 वर्ष प्राचीन बतलाया गया है। इसकी पुष्टि प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख से होती है। जीर्णोद्धार सं. 2065 में श्री निपुणरत्न विजय जी म. सा. की निश्रा में सम्पन्न हुआ। यह पूर्व में श्री चन्द्रप्रभ भगवान का मंदिर था।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री वासुपूज्य भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 19'' की ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। इस पर सं. 1868 मिगसर सुदि 3 का लेख है।
2) श्री चन्द्रप्रभ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 9'' की ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1868 मिगसर सुदि 3 का लेख है।
3) श्री नेमिनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 9'' की ऊँची प्रतिमा है।

नीचे की वेदी पर :

श्री चन्द्रप्रभ भगवान की श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1868 मिगसर सुदि 3 का लेख है।

उक्त प्रतिमाओं में से एक प्रतिमा नई है, शेष प्राचीन है।

बाहर – आलियों में :

1) श्री चण्डादेवी की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। (बाईं ओर)
2) श्री कुमार यक्ष की श्वेत पाषाण का 13'' ऊँची प्रतिमा है। (दाईं ओर)

इन दोनों प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा 10.12.10 को सम्पन्न हुई।

सभा मण्डप में :

1) श्री गौतम स्वामी की श्वेत पाषाण की 5'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री माणिभद्र की प्राचीन प्रतिमा स्थापित है।

मंदिर की 5 बीघा जमीन है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा फाल्गुन कृष्णा 10 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की व्यवस्था जैन समाज की ओर से की जाती है और समाज की ओर से श्री घेवरचंद जी संचेती व राजेन्द्र जी बाबेल व्यवस्था को देखते है।मो. 9772185841

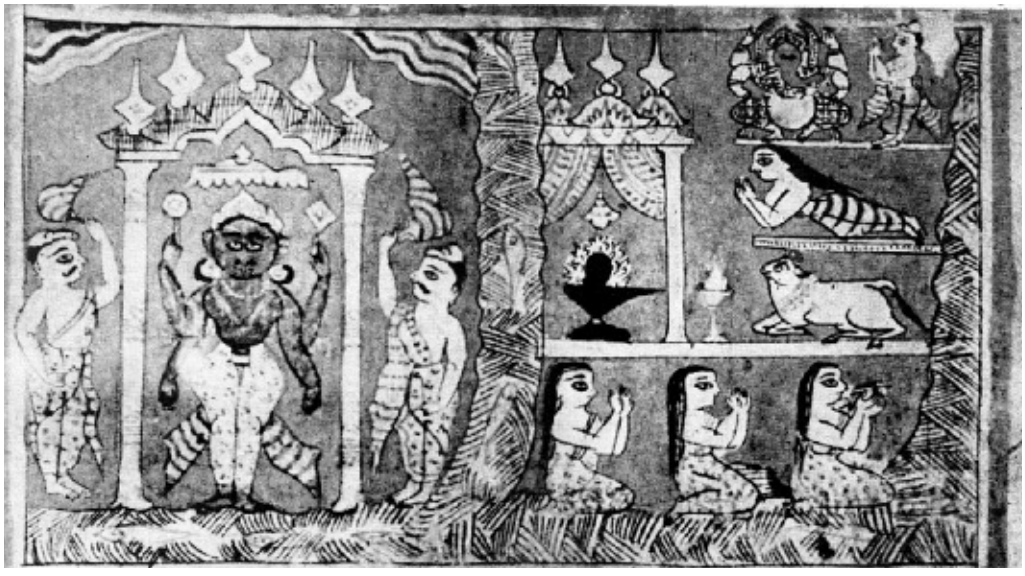

यह चित्र बाल गोपाल स्तुति, कांकरोली के पूज्य श्री बृजेश कुमार जी द्वारा संग्रहित है जो 40–50 वर्ष की पुस्तक में लकड़ी व केनवास के पट्टों में पाए जाते हैं। यह चित्र 18 वीं व 19 वीं शताब्दी का है

जैसे व्यवहार की तुम दूसरों से अपेक्षा रखते हो,
वैसा ही व्यवहार तुम दूसरों के प्रति करों।

श्री नेमीनाथ भगवान का मंदिर दोलतगढ़-311301, तहसील आसींद

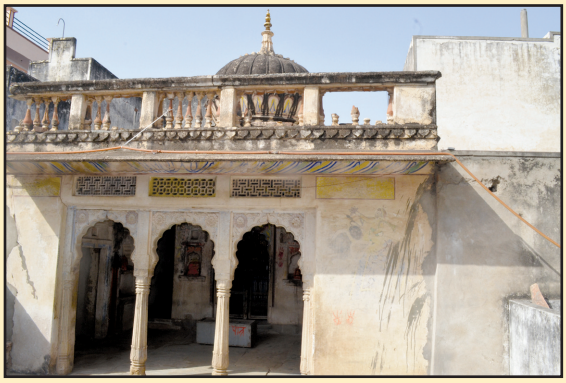

यह घूमटबंद भव्य मंदिर जिला मुख्यालय से 55 व तहसील मुख्यालय से 14 किलोमीटर दूर स्थित है। यह मंदिर बहुत प्राचीन है। पूर्व में इस मंदिर परिसर में यति जी का निवास स्थान था। कमरे आदि बने हुए है। यह मंदिर लांछण के आधार पर (बकरे) कुंथुनाथ भगवान, प्रचलन के आधार पर ऋषभदेव व लेख के आधार पर श्री नेमिनाथ भगवान का मंदिर है। उल्लेखानुसार यह मंदिर लगभग सं. 1900 में श्री किशनलाल जी नवलखा द्वारा बनाया गया है। यह तृतीय श्रेणी का ठिकाना रहा है। यहाँ के शासक चुण्डावत कहलाते थे।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री नेमिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 15'' की ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1986 ज्येष्ठ वदि 3 का लेख है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री जिनेश्वर भगवान की 6'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1593 वै. सु. 5 का लेख है।
2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 5'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर वि. सं. 1914 (अस्पस्ट) वै. सु. 6 का लेख है।
3) श्री मुनिसुव्रत भगवान की 6'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1519 आषाढ़ वदि 5 का लेख है।
4) श्री सिद्धचक्र यंत्र ताम्बे का गोलाकार 4.5'' का है।
6) श्री सिद्धचक्र गोलाकार 4'' का है।

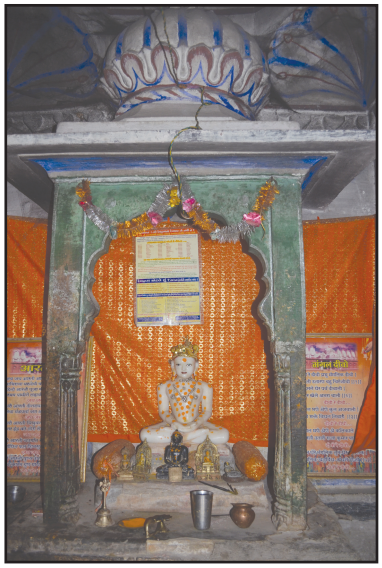

सभा मण्डप में प्राचीन चित्रकारी है सम्भवतया प्राचीन मंदिर रहा है। ऐसी जानकारी मिली है की मंदिर की जमीन भी है, जानकारी करना चाहिए। जीर्णशीर्ण है, जिर्णोद्धार की आवश्यकता है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा भादवा सुदि 5 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख स्थानीय तेरापंथ श्वेताम्बर सभा द्वारा श्री बाबूलाल जी नवलखा द्वारा की जाती है। सम्पर्क सूत्र : मो. 9982651408

श्री जिनेश्वर भगवान का मंदिर तिलोली-311301, तहसील आसींद

यह घूमटबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 60 व तहसील मुख्यालय से 18 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर करीब 500 वर्ष प्राचीन बताया गया है। इस मंदिर का निर्माण सं. 1930 में होने का उल्लेख है। यह तृतीय श्रेणी का ठिकाना रहा है। यहाँ के शासक सांगावत कहलाते थे।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री जिनेश्वर भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 25'' की ऊँची प्रतिमा है। प्रतिमा का परिकर (तोरणद्वार) प्राचीन है, कई स्थानों से खण्डित है। प्रतिमा भी प्राचीन है व खनन से प्राप्त हुई है।

2) श्री ऋषभदेव भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्याम पाषाण की 9'' की ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1587 का लेख है।

3) श्री जिनेश्वर भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 9'' की ऊँची उत्थापित प्रतिमा है। इस पर सं. 1252 का लेख है। इस पर तोरण द्वार है।

ये तीनों ही प्रतिमाएं खनन से प्राप्त हुई।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा भादवा सुदि 5 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख जैन समाज द्वारा श्री पारसमल जी बापना द्वारा की जाती है।

सम्पर्क सूत्र - मो. 9587564710

बाहर :

श्री माणिभद्र देव की श्याम पाषाण की प्रतिमा है ऐसा सुना जाता है कि प्राचीन काल में यति द्वारा मंदिर उडाकर ला रहे थे, यहाँ किसी कारण से गिरा उसके एक ही प्रकार के पत्थर गिरे जो अभी भी मकानों के बाहर देखे जा सकते है। जीर्णोद्धार की अति आवश्यकता है।

श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर लाछुड़ा-311 301, तहसील आसींद

यह घूमटबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 46 व तहसील मुख्यालय से 20 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर करीब 200 वर्ष प्राचीन बताया गया है। सभामण्डप नया बना है। मूल मंदिर प्राचीन है। इस मंदिर का निर्माण सं. 1875 मे होने का उल्लेख है। यह तृतीय श्रेणी का ठिकाना रहा है। इसके शासक राठौड़ कहलाते थे।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 17'' की ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री जिनेश्वर भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 9'' की ऊँची प्रतिमा है।

3) श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्याम पाषाण की 10'' की ऊँची प्रतिमा है।

4) श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की 6'' ऊँची प्रतिमा है।

5) श्री पार्श्वनाथ (शंखेश्वर) भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है। ये सभी प्रतिमाएं उत्थापित है।

इनमें पाँचों प्रतिमा की प्रतिष्ठा संवत् 2067 मिगसर सुदि 5 (दिनांक 10.12.10) को पं. श्री निपुणरत्न विजय जी म. सा. श्री निश्रा में सम्पन्न हुई।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा भादवा सुदि 5 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख जैन श्वेताम्बर तेरापंथ समाज द्वारा श्री अमरचंद जी चोरड़िया द्वारा की जाती है। सम्पर्क सूत्र - 97835 54159

श्री विमलनाथ भगवान का मंदिर बरसनी-311302, तहसील आसींद

यह शिखरबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 65 व तहसील मुख्यालय से 16 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर करीब 450 वर्ष प्राचीन है। इसकी पुष्टि प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख के आधार पर भी होती है। समय के अनुसार जीर्ण-शीर्ण हो जाने से जिर्णोद्धार सं. 2055 में सम्पन्न हुआ। उल्लेखानुसार यह पूर्व में पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर था। निर्माण सं. 1800 के लगभग में हुआ था।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री विमलनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 15'' की ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. (2050) 2060 का लेख है।

2) श्री शीतलनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 10'' की ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. (2050) 2060 का लेख है।

3) श्री शान्तिनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 10'' की ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2050 का लेख है।

4) श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की 7'' ऊँची उत्थापित प्रतिमा है। इस पर सं. 1632 का लेख है। पूर्व में यह प्रतिमा ही विराजमान थी।

बाहर आलियों में :

1) श्री माणिभद्र देव की श्याम पाषाण 9'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री पद्मावती देवी की श्याम पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है।

तीन मंगल मूर्तियाँ प्रतिष्ठित है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा चैत्र कृष्णा 11 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की 5 बीघा जमीन है। जो समाज के पास ही है। इससे प्राप्त आय से मंदिर की व्यवस्था की जाती है।

मंदिर की व्यवस्था श्री उमरावसिंह जी कोठारी द्वारा की जाती है। सम्पर्क सूत्र - 95710 68880

श्री ऋषभदेव भगवान का मंदिर अंटाली-311302 तहसील आसींद

यह शिखरबंद विशाल मंदिर जिला मुख्यालय से 30 व तहसील मुख्यालय से 20 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर करीब 900 वर्ष प्राचीन बताया गया है। इसकी पुष्टि स्थापित प्रतिमा से भी होती है मंदिर जीर्णशीर्ण होने की अवस्था में सं. 2007 में जीर्णोद्धार हुआ। उल्लेखानुसार इस मंदिर का निर्माण मानाजी बाबेल द्वारा सं. 1500 के लगभग कराया गया। यह तृतीय श्रेणी का ठिकाना रहा है। इसके शासक राठौड़ कहलाते थे।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री ऋषभदेव भगवान की (मूलनायक) श्याम पाषाण की 29'' की ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1170 का लेख है।

2) श्री मुनिसुव्रत भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 27'' की ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1119 का लेख है।

3) श्री चन्द्रप्रभ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 25'' की ऊँची प्रतिमा है। इस पर अस्पष्ट व अपठनीय लेख है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री सम्भवनाथ भगवान की 9'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 2051 का लेख है।

2) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 4'' का है। इस पर सं. 2051 का लेख है।

बाहर :

1) श्री शासन देवी की श्वेत पाषाण की 4.8'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री आदिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 38'' ऊँची प्रतिमा है।

सभा मण्डप में दाहिनी ओर :

1) श्री शान्तिनाथ भगवान की 37'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर केवल 11.....पढ़ने मे आता है।

2) श्री जिनेश्वर भगवान की 35'' (परिकर सहित) ऊँची प्रतिमा है।

बाई ओर :

1) श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 29'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की 23'' ऊँची खड़ी चतुर्विंशति प्रतिमा है।

3) श्री जिनेश्वर भगवान (स्तम्भ पर) की श्याम पाषाण की 21'' ऊँची प्रतिमा है।

4) श्री अधिष्ठायक देव की चार मूर्तियाँ स्थापित है।

प्राचीन स्तम्भ व तोरणद्वार बने हुए है। मंदिर की 4 बीघा जमीन है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा अक्षय तृतीय को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की व्यवस्था स्थानीय जैन समाज द्वारा दी जाती है।

समाज की ओर से श्री घेवरचन्द जी बाबेल द्वारा व्यवस्था की जाती है।

सम्पर्क सूत्र - 01480 226612, 99825 62128

जितनी बार हमारा पतन हो,
उतनी बार उठने में गौरव है।

श्री वासुपूज्य का भगवान का मंदिर अमेसर-311302, तहसील आसींद

यह घूमटबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 55 व तहसील मुख्यालय से 13 किलोमीटर दूर है। यह मंदिर 100 वर्ष प्राचीन बतलाया जाता है। जीर्णोद्धार 10 वर्ष पहले कराया गया था। उल्लेखानुसार पूर्व में यह मंदिर श्री आदिनाथ भगवान का लगभग सं. 1900 का बना हुआ है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री वासुपूज्य भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 17'' की ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री शान्तिनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 9'' की ऊँची प्रतिमा है।

3) श्री महावीर भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 9'' की ऊँची प्रतिमा है।

नीचे की वेदी पर :

1) श्री आदिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 12'' की ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1977 वै. सुदि 7 का लेख है।

उत्थापित धातु की चल प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री आदिनाथ भगवान की 8'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 2054 माघ सुद 13 का लेख है।

2–3) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 2'' व 2'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमाएं है।

4) श्री सिद्धचक्र गोलाकार 4'' का है। इस पर सं. 2054 का लेख है।

बाहर सभा मण्डप में :

1) श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की 12'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री अधिष्ठायक (मणिभद्र देव) की 21'' ऊँची प्रतिमा है।

3) श्री पद्मावती देवी की श्याम पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। यह प्रतिमा सं. 2055 की प्रतिष्ठित है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा चैत्र वदि 11 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर के नीचे दुकान तथा नोहरा है।

मंदिर की व्यवस्था स्थानीय जैन समाज की ओर से श्री पारसमल जी पिपाड़ा, मो. 94686 04748 देखते है।

इसका दैनिक व्यय बोली से प्राप्त आय जो मयादि खाते में जमा है उससे प्राप्त ब्याज की आय से की जाती है ।

यह चित्र संग्रहणी सुत्र से 1694 में कोम्बे में चित्रित किया गया है ।
यह चित्र भी पुण्यविजय जी म.सा. ने संग्रहित किया है ।

जो दु:ख आने से पहले ही दु:ख मानता है, वह आवश्यकता से ज्यादा दु:ख उठाता है।

श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर संग्रामगढ़-311302, तहसील आसींद

यह शिखरबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 80 व तहसील मुख्यालय से 15 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर करीब 300 वर्ष प्राचीन बतलाया गया है। मंदिर लगभग खण्डहर हो गया था। इस मंदिर को श्री बछराज जी पिता जमना जी डांगी ने सं. 1845 माघ सुदि 7 को निर्माण कराया, 20 वर्ष पूर्व जीर्णोद्धार कराया गया। उल्लेखानुसार यह मंदिर करीब सं. 1700 के लगभग का बना है। यह द्वितीय श्रेणी का ठिकाना रहा है। इसके शासक सांगावत कहलाते थे।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री आदिनाथ भगवान की (मूलनायक) श्याम पाषाण की 25'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है लेकिन विशाल परिकर 51'' ऊँचा स्थापित है।

2) श्री पद्मप्रभ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1889 का लेख है।

3) श्री चन्द्रप्रभ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 12'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1889 वै. सुदि 5 का लेख है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री अभिनन्दन भगवान की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2045 चैत्र शु. 3 बुधवार का लेख है।

2) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 5'' का है।

3) श्री अष्ठमंगल यंत्र 6''X3.5 का है। इस पर सं. 2019 का लेख है।

बाहर सभा मण्डप में :

1) श्री अधिष्ठायक देव की प्रतिमा है। माणिभद्र देव बोला जाता है।

खण्डित प्रतिमाएं :

1) पार्श्वनाथ भगवान की हरा पाषाण की प्रतिमा है। इस पर सं. 1889 का लेख है।

2) चन्द्रप्रभ भगवान व अन्य दो प्रतिमाएं भी खण्डित है।

मंदिर के साथ प्राचीन उपाश्रय है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा वै. सुदि 5 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की व्यवस्था स्थानीय जैन समाज द्वारा देखी जाती है। जैन समाज की ओर से श्री अभिषेक कुमार चौधरी द्वारा व्यवस्था देखी जाती है। सम्पर्क सूत्र - 99827 98700

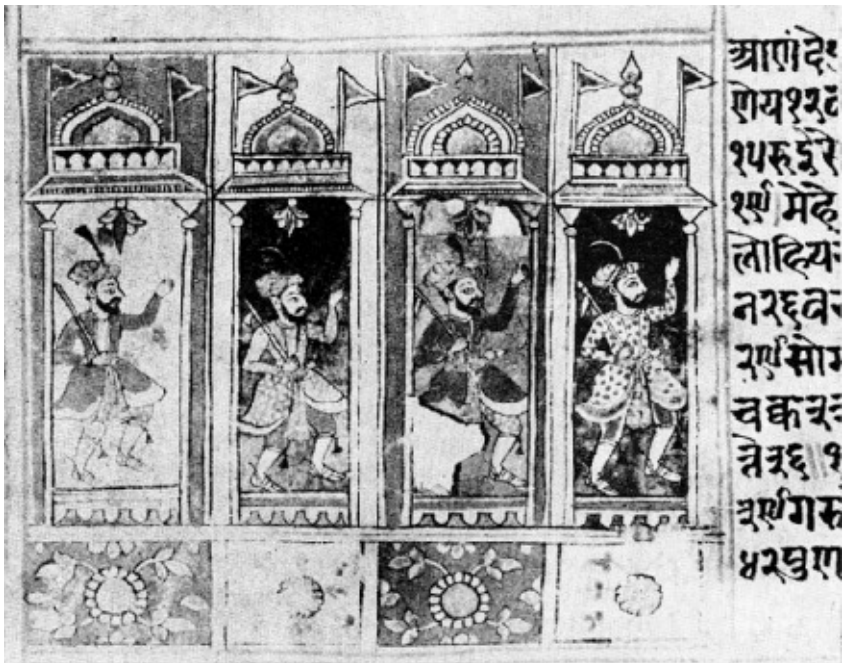

यह चित्र समग्रहणी सूत्र से जो राघवन ने सन् 1638 में बनाया है। इसमें नृत्य कला को दर्शाया गया है यह चित्र राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली में संग्रहित है।

कष्ट सहने करने का अभ्यास
जीवन की सफलता का परम सूत्र है।